प्रकाशनार्थ

पटना, **17** फरवरी। सार्वजनिक विमर्श में एक अत्यंत गंभीर किंतु कम चर्चा वाला विषय माइक्रो-प्लास्टिक का घातक प्रभाव है| यह हमारे भीतर और बाहर हर जगह मौजूद है। भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इस खतरे को समझते हुए आज एक जागरूकता अभियान का आयोजन किया | इसका उद्देश्य मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) को प्रोत्साहित करना तथा सभी के लिए अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के सतत विकास लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित करना था। इस कार्यक्रम का संयुक्त रूप से आयोजन एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) के सेंटर फॉर स्टडीज ऑन एनवायरनमेंट एंड क्लाइमेट की ई.आई.ए.सी.पी. इकाई तथा जन शिक्षण संस्थान (जे.एस.एस) द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शीर्षक "घर में अदृश्य खतरे: इनडोर प्रदूषण एवं माइक्रो-प्लास्टिक को समझना" था|

खतरे की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए ई.आई.ए.सी.पी. की कार्यक्रम पदाधिकारी सुश्री पूजा कुमारी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार इस ग्रह पर प्रत्येक वयस्क औसतन प्रतिवर्ष 39 से 52 हजार माइक्रो-प्लास्टिक कणों का सेवन कर रहा है। माइक्रो-प्लास्टिक अत्यंत सूक्ष्म, अदृश्य एवं प्लास्टिक कण (1 नैनोमीटर से 5 मिलीमीटर आकार तक) होते हैं, जो सौंदर्य प्रसाधनों जैसे निर्मित उत्पादों में पाए जाते हैं या प्लास्टिक को काटने या रगड़ने से उत्पन्न होते हैं। ये आसानी से घुलते भी नहीं हैं| ये हानिकारक प्रदूषक हमारे रक्त और अंगों से लेकर महासागरों, मिट्टी तथा वायुमंडल तक हर जगह फैल चुके हैं। ये नष्ट भी नहीं होते हैं और श्वसन-संबंधी समस्याएं, हार्मोनल असंतुलन या थायरॉयड की बिमारी जैसी गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। ईमिउन प्रणाली को भी यह कमजोर कर देते हैं|

सुश्री कुमारी ने समाधान के रूप में एकल-उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा रसोई या भोजन के लिए स्टील, कांच या मिट्टी के बर्तनों के उपयोग की वकालत की। घरों में उचित वेंटिलेशन सुनिश्चित करना चाहिए तथा नियमित रूप से सफाई करनी चाहिए। फर्श पोछने के लिए गीले सूती कपड़े का उपयोग किया जाए और उन्हें धूप में सुखाया जाए। सामान ले जाने के लिए कपड़े के थैलों का प्रयोग करें तथा शिशुओं के लिए सूती वस्त्रों का उपयोग करें।

कार्यक्रम की शुरुआत में जे.एस.एस के निदेशक डॉ. संदीप कुमार ने सभी से अधिक पर्यावरण-अनुकूल और स्वास्थ्य-सचेत जीवनशैली अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि धूप में समय बिताएं और स्वयं को वातानुकूलित कमरों तक सीमित न रखें। ई.आई.ए.सी.पी. के समन्वयक डॉ. सुनील कुमार गुप्ता ने उपस्थित लोगों को प्रेरित करते हुए कहा कि छोटे कदमों से शुरुआत करें — जैसे रसोई में प्लास्टिक के स्थान पर स्टील का उपयोग। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह कदम व्यापक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करेगा। माइक्रो-प्लास्टिक से होने वाला भीतरी प्रदूषण बाहरी प्रदूषण से लगभग दो गुना ज्यादा है|

इस कार्यक्रम के आयोजन में ई.आई.ए.सी.पी. के गुलशन पटेल एवं प्रकाश तथा जे.एस.एस. के पंकज कुमार, शोभा कुमारी और बिभास दत्ता ने सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में जे.एस.एस की लगभग 50 महिला प्रशिक्षुओं ने भी भाग लिया।

(अभिषेक प्रसाद)